पाठ - 3
क़ब्र

الدرس الثالث - هندي
القبر

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से उल्लेखित है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः
मैयत को जब क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी वापस होते हैं तो वह उनकी जूतियों की आवाज़ सुनता है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे फ़रमायाः फिर उसके बाद दो फ़रिषते आते हैं और उसे बिठाते हैं और उससे कहते हैं तुम उस आदमी के बारे में क्या कहते थे? यदि वह व्यक्ति मोमिन होगा तो कहेगाः मैं गवाही देता हूं कि वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। फिर उससे कहा जाता है कि जहन्नम में अपनी जगह देख लो, जिसे अल्लाह ने जन्नत की जगह से बदल दिया है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे फ़रमायाः "वह व्यक्ति दोनों जगहों को देखेगा।
यदि मरने वाला व्यक्ति काफ़िर या मुनाफ़िक़ हो तो इस सवाल के जवाब में कहेगाः मुझे नहीं मालूम, मैं लोगों से सुनता था कि वह कुछ कहा करते थे, वही मैं भी कहा करता था। तो उससे कहा जाता है कि न तो तुम्हें मालूम हुआ और न ही तुमने उसे जानने की कोशिश की। उसके बाद उस व्यक्ति के कानों के बीच लोहे की हथौड़ी से मारा जाता है, जिसकी वजह से वह इतनी ज़ोर से चीखता है कि इंसान और जिन्नात के सिवा उसके पास मौजूद सारी मख़लूक़ात इस चीख़ को सुनती हैं।
क़ब्र में रूह का शरीर में वापस आना आख़िरत के मामलों में से एक है जिसका सांसारिक जीवन में इंसानी अक़्ल व शुऊर अंदाज़ा नहीं लगा सकती। तमाम मुसलमान इस बात पर सहमत हैं कि यदि इंसान मोमिन हो और नेमतों का मुस्तहिक़ हो तो उसको कब्र ही में नेमतों से नवाज़ा जाता है और यदि अज़ाब का अधिकारी है तो कब्र में ही अज़ाब से दो–चार हो जाता है। यदि अल्लाह तआला ने उसे माफ़ किया है। अतएव अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾ [غافر:٤٦]

यानी, "आग है जिसके सामने यह हर सुबह व शाम लाये जाते हैं और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी, फ़रमान होगा कि फ़िरऔनियों को सख़्ततरीन अज़ाब में डालो। (सूरह अल ग़ाफ़िर आयत 46)
अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हैः "तुम लोग क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो। सही अक़्ल इन चीज़ों का इन्कार नहीं कर सकती है क्योंकि इंसान दुनियावी जिन्दगी में इससे क़रीबतर चीज़ों का तजरबा करता है। जैसा कि सोने वाला इंसान महसूस करता है कि उसे सख़्त अज़ाब दिया जा रहा है। वह चिल्लाता है, चीख़ता है, और मदद चाहता है। जबकि उसके बगल में दुसरा इंसान इस तरह की किसी भी चीज़ों को महसूस नहीं कर रहा होता है। जबकि मौत और ज़िन्दगी में बहुत बड़ा अन्तर है। क़ब्र में अज़ाब शरीर और आत्मा दोनों को होता है।
अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः "**क़ब्र आख़िरत की मन्ज़िलों में से पहली मन्ज़िल है। यदि इंसान इसमें निजात पा जाए तो उसके बाद की मन्ज़िलें आसान हो जायेंगी। लेकिन यदि इंसान इसमें निजात नहीं पा सकेगा तो बाद की मन्ज़िलें उससे सख़्त होंगी**
यही कारण है कि एक मुसलमान को क़ब्र के अज़ाब से कसरत से पनाह मांगने की शिक्षा दी गयी है। विशेष कर नमाज़ में सलाम फेरने से पहले। और बुराइयों से दूर रहे जो क़ब्र और जहन्नम में अज़ाब से दो.चार होने का पहला कारण है। इस अज़ाब को अज़ाबे क़ब्र कहा जाता है, इस वजह से कि अक्सर लोगों को क़ब्र में दफ़्न कर दिया जाता है, अन्यथा डूब कर या जल कर मरने वाले को, या उस व्यक्ति को जिसे दरिंदों ने खा लिया हो, उनको भी बरज़ख़ में अज़ाब दिया जाता है। अज़ाबे क़ब्र में लोहे के हथौड़े से मारा जाता है और उसके सिवा दूसरी तरह से भी अज़ाब दिया जाता है। मिसाल के तौर पर क़ब्र को तारीकी से भर दिया जाता है। या जहन्नम को आग का बिछौना कर दिया जाता है और उसके लिए जहन्नम का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। और उसके अमल को बदसूरत, बदबूदार इंसान की शक्ल व सूरत दे दी जाती है जो उसके साथ क़ब्र में बैठता है। यदि इंसान काफ़िर या मुनाफ़िक़ हो तो वह इस अज़ाब में बराबर मुबतला रहेगा। लेकिन यदि इंसान मोमिन हो जिससे गुनाह सरज़द हुए हों, तो उसके गुनाह के अनुसार उसका अज़ाब अलग–अलग होगा। और उसका अज़ाब समाप्त भी हो जाता है। जहां तक मामला मोमिन का है तो क़ब्र में उसे नेमतों से नवाज़ा जाता है, उसके क़ब्र को कुशादा कर दिया जाता है, क़ब्र को नूर से भर दिया जाता है और उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है। जिससे जन्नत की खुशबू और सुगंध आती है और उसके लिए जन्नत का बिछौना कर दिया जाता है और उसके अमल को एक खूबसूरत इंसान की सूरत दे दी जाती है, जिससे वह क़ब्र में उनसियत हासिल करता है।